A Study for Working Process of Library in Higher Secondary Schools of Dist Betul

(जिला बैतूल के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली का एक अध्ययन)

* **Sangeeta More**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS,Sehore

** **Dr Arun Modak**
Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

मानव जाति में जैसे–जैसे सभ्यता और संस्कृति का विकास होता चला गया, वैसे–वैसे मौलिक आवष्यकताओं के अलावा अन्य विकास की ओर भी उसके मस्तिष्क ने कार्य करना षुरू कियौ। विकास एक से दूसरे व्यक्ति, एक परिवार से दूसरे परिवार, एक समाज से अन्य समाज एवं एक देष से दूसरे देष की ओर बढऋता है। इस तरह विकास की प्रक्रिया पूरी दुनिया में फलती फूलती है। षिक्षित व्यक्ति या समाज अपने चारों ओर होने वाली प्रत्येक घटना को ध्यान पूर्वक देखता है उस पर चिन्तन एवं मनन करता हे। फिर उस पर अपने स्वंय का विचार रचखता है और विष्व में होने वाली प्रत्येक विकास की प्रक्रिया पर ध्यान रखता है। उसके चिन्तन एवं मनन करने पर एवं स्वयं के एक विचार बनाने में बहुत सी मिलती–जुलती घटनाओं या विचारों को पढऋना एवं सूझना पडऋता है यहीं पर उसे एक ऐसी संस्था की आवष्यकता महसूस होती है जो ऐसे साहित्य अथवा विचार उपलब्ध करायें जो कि उसके विचारों को एक निष्चित दिषा देने में सक्षम हो सके, ऐसी संस्था पुस्तकालय ही हो सकती है। इस समय पुस्तकालय ही एक ऐसी संस्था के रूप में सामने आती है जहां व्यक्ति को अपनी मानसिक संतुष्टि, विचारों की अभिव्यक्ति के अलावा मनोरंजन हेतु विभिन्न प्रकार के विचारों या साहित्य का संग्रह मिलता है। हमारे समाज में अक्सर बच्चों को साहित्य से वंचित रखा जाता है, जिसकी कई वजहें रही है, चाहे वो पाठ्य पुस्तकों का भय या अन्य किताबों को पढ़ना, इन्हे समय की फिजूलखर्ची माना जाता है क्योंकि इनका सीधा–सीधा कक्षा या परीक्षा से कोई संबंध नहीं होता है। लेकिन ऐसी कई बातों से प्रभावित होकर हम बच्चों को साहित्य से दूर करते जाते है तो उनके मानसिक और बौद्धिक विकास में एक बड़ी रूकावट भी जोड़ते जाते है, जिसका प्रभाव उनके पूरे जीवन पर पड़ता है। पुस्तकालय एक ऐसा छोटा सा बिजली घर है जो पुस्तों अर्थात पाठ्य सामग्री में बंधी विचार षक्ति को विष्व के मस्तिष्क में ढालने, विकसित करने तथा प्रसार करने के लिये खोला जाता है।

चूंकि पुस्तकालय की व्यवस्था लोकतांत्रिक व्यवहार करते हुये बच्चों को अवसर मुहैया कराती है, जहां वे स्वतंत्र होकर अपनी इच्छानुसार कुछ भी पढ़ सकते है। उसके बाद सोचने की, विचार करने की, किसी किताब को अपनी तरह से व्याख्या करने, समझने, कल्पना करने और उस पर अमल करने या न करने की आजादी भी यहां है। यह वातावरण बच्चों के भीतर लोकतांत्रिक प्रकिया के बीज बोना षुरू कर देता है और आगे चलकर व्यवहारिक स्तर पर जीवन में भी बच्चे लोकतंत्र की गरिमा को समझते हुये सामाजिक रूप से जिम्मेदार हो सकेगें। पुस्तकालय की इसी महत्वपूर्ण आवष्यकता को देखते हुये, षोधकर्ता द्वारा महसूस किया गया कि विद्यार्थी जीवन से ही बालकों को पाठ्य पुस्तको के अलावा अन्य नैतिक साहित्य के करीब में लाया जाना जरूरी है, और यह कार्य विद्यालय में पुस्तकालय के बिना संभव नहीं है। इस प्रकार विद्यालय में प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों के लिये पुस्तकालय के द्वारा पुस्तकों की व्यवस्था किया जाना नितांत आवष्यक है। किषोरावस्था को पार कर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में तो पाठ्य पुस्तकों और अन्य साहित्य की आवष्यकता को व्यक्तिगत स्तर पर हमेषा ही उपलब्ध कराना असंभव सा रहता है इस हेतु विद्यालय का पुस्तकालय इन विद्यार्थियों की आवष्यकता पूर्ति के लिये मील का पत्थर साबित होता है। अषासकीय विद्यालयों में पालको के दबाव, सहमति तथा स्वंय विद्यालय प्रबन्धन की जिम्मेदारी के चलते पुस्तकालय एवं पुस्तकों की बेहतर व्यवस्था देखी जा सकती है, लेकिन षासकीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को पुस्तकों हेतु भटकना पड़ता है।

निःषुल्क और अनिवार्य बाल षिक्षा अधिनियम, 2009 का परिषिष्ट बताता है कि अब यह कानूनी तौर पर अनिवार्य है कि सभी स्कूलों के पास एक सुसज्जित पुस्तकालय हो, हालांकि इस अधिनियम के कई अन्य प्रावधानों की तरह यह भी अब तक पूरे तौर पर लागू नहीं हो पाया है। इसकी मुख्य वजह आर्थिक समस्या बतायी जाती हैं पर हमें इसके पीछे वैचारिक समस्याओं को भी समझना जरूरी है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 20052 स्कूल पुस्तकालय को एक बौद्धिक स्थान के रूप में परिकल्पित करती है, जहॉ षिक्षकों, बच्चों और समुदाय को ज्ञान और कल्पना को गहराई से जानने का अवसर मिल सकता है। षास्त्रों में भी पुस्तकों के महघ्त्व को सदैव वर्णित किया गया है। संस्कृत की एक सूक्ति के अनुसार –

काव्य षास्त्र विदेन, कालो गच्छति घीमताम्।
व्यवसनेन च मूर्खाणां, निद्रयाकलहेन वा।।

अर्थात बुद्धिमान लोग अपना समय काव्य–षास्त्र अर्थात पठन–पाठन में व्यतीत करते है, वहीं मूर्ख लोगों का व्यसन, निद्रा अथवा कलह में बीतता है। इसी बात को ध्यान रखते हुये षोधकर्ता ने षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय की आवष्यकता एवं उपलब्धता तथा पुस्तकालय के प्रबन्धन पर षोध कार्य करने का विचार किया, ताकि वस्तुस्थिति

सामने लायी जा सके, और षासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को भी इसका लाभ प्राप्त हो सके।

2. षोध उद्देष्य

संसार में जितनी भी क्रियायें होती है, वे किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है। लक्ष्य या उद्देष्य विहीन कार्य निरर्थक होते है। षोध एक सोद्देष्य प्रक्रिया है। अध्ययन के उद्देष्य ही षोध प्रक्रिया में लगे षोधार्थी को क्रियाषील बनाते है। वस्तुतः उद्देष्यों के ज्ञान के अभाव में षोधार्थी उस नाविक के समान है जिसे अपने गंतव्य स्थल का ज्ञान नहीं है।

प्रस्तुत शोधकार्य निम्न उद्देष्य के आधार पर पूर्ण किया गया है– मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली का अध्ययन करना।

3. षोध परिकल्पना

परिकल्पना को शोध का केन्द्र बिन्दु माना जाता है जिसके परितः सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया केन्द्रित होती है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव है।

मैकग्यूगन के अनुसार –

"दो या दो से अधिक चरों के बीच के संभावित संबंधों के बारे में बनाये ये जांचनीय कथन को परिकल्पना कहा जाता है।" प्रस्तुत षोध में निम्न षून्य परिकल्पना को निर्मित किया गया है – मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. षोध परिसीमायें

1. प्रस्तुत षोधकार्य बैतूल तहसील में संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से सम्बन्धित है।

5. षोध प्रदत्तों का संकलन एवं गणना

सारणी संख्या – 4

मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं	विवरण	पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली	स्तर
1.	षासकीय एक्सीलेंस हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार	80	अतिउत्तम
2	षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी	40	औसत
3	सुभाष हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार	60	मध्यम
4	षासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज	60	मध्यम
5	षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	60	मध्यम

सारणी संख्या – 4 के अन्तर्गत बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि बैतूल तहसील में संचालित एक्सीलेंस हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली अतिउत्तम पायी गयी, जिसके सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रतिषत 80 पाया गया, जबकि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली औसत पायी गयी, जिसके सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रतिषत 40 पाया गया, सुभाष हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली मध्यम पायी गयी, जिसके सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रतिषत 60 पाया गया, षासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली मध्यम पायी गयी, जिसके सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रतिषत 60 पाया गया तथा षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोठी बाजार में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली मध्यम पायी गयी, जिसके सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रतिषत 60 पाया गया।

दण्ड आरेख संख्या – 4

मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु हेतु कार्य प्रणाली के सांख्यिकीय विष्लेषण का दण्उ आरेख

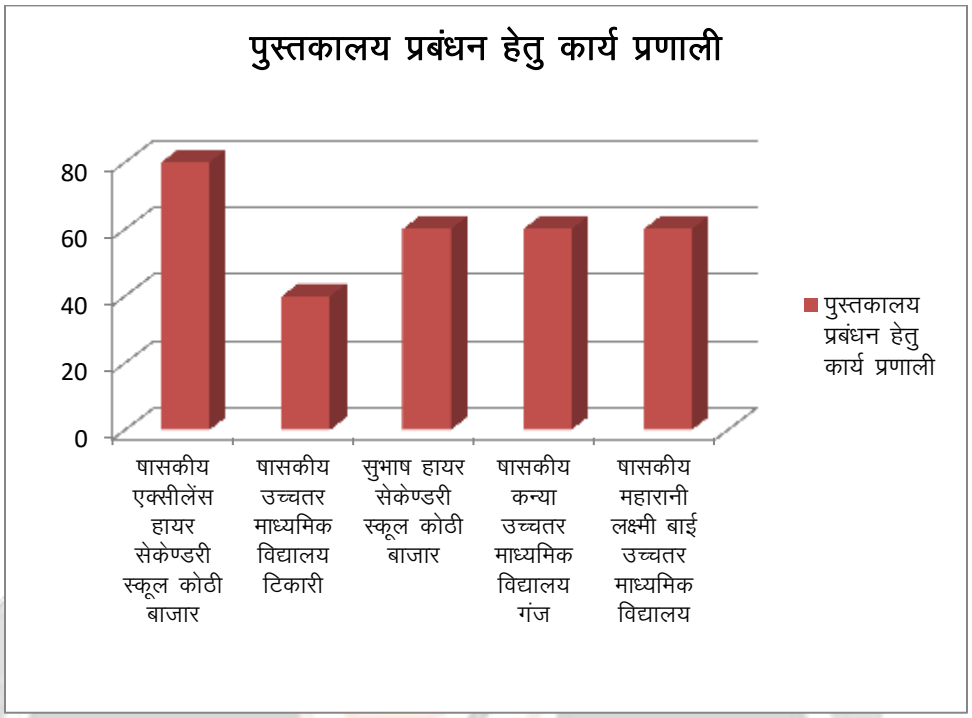

इस प्रकार पाया गया कि बैतूल तहसील में संचालित एक्सीलेंस हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली अतिउत्तम, सुभाष हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार, षासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज एवं षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोठी बाजार में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली मध्यम तथा षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी में पुस्तकालय प्रबंधन हेतु कार्य प्रणाली औसत पायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्निहोत्री, रविन्द्र , "भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ," दिल्लीः रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइन्सेस, 1956*
2. *आर्य, डोनाल्ड , "इट आल", इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च इन एजूकेशन, न्यूयार्क, 1972.*
3. *भट्टाचार्य, एस, "फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल रिसर्च", बड़ौदा, 1968.*
4. *भारत सरकार नई दिल्ली, "प्रोग्राम ऑफ एक्सन नेशनल पॉलिसी आन एजूकेशन", नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 1986,*

5. *गुडे, पी. के., "डब्ल्यू0 जे0 एण्ड हैट", मेथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क, मैकग्राहिल, 1962.*
6. *ओड, एल. के., "शिक्षा के नूतन आयाम", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1998.*
7. *शर्मा. गुप्ता, एवं पुराणिक, "भारतीय शिक्षा विकास और समस्याएँ,", इलाहबाद,, 2012.*
8. *शुक्ला. आर. पी, "जी.एस.डी. – शिक्षा के सिद्धांत", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, दयाल बाग, आगरा 19 वाँ संस्करण, 2016.*
9. *वर्मा, जी. एस, "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, मेरठ, 2005.*

—— 00 ——